SHRĪ DEVĪ ANUSHTHĀNAM

LIST OF ITEMS FOR DEVĪ ANUSHTHĀNAM

1. Chowraṅga (to seat the Shrī Devī Photograph)
2. Devī picture or Devī Vigraha
3. Red Flowers for the Devī
4. Red Silk Āsana to be spread on the Chowraṅga
5. Lamp (Silver/Copper/Brass)
6. Glass cover for the lamp
7. Cow's ghee
8. Cotton wicks (2 long ones)
9. Personal Āsana
10. Āchamana Pātra + Spoon + Plate
11. Personal Japa Mālā

INSTRUCTIONS FOR SHRĪ DEVĪ ANUSHTHĀNAM

i. To keep the correct count, tie a strand of silken or woollen thread between the 28th and 29th beads, and on either side of the Meru / Shikhā maṇi.
ii. Place the ghee lamp to your left in front of the Devī Vigraha or Devī Photo and light it before starting the Devī Anushthānam
iii. Sit facing East or North
iv. Saṅkalpa to be chanted as given on Page 3
v. Start Mantra A from first bead after the Meru
(chant 28 times) when you reach the wool, turn the Mālā
Chant Mantra B 28 times
When you reach the Meru, turn the Mālā
Chant Mantra C 108 times from the first bead after the Meru
When you reach the Meru, turn the Mālā
Chant Mantra B 28 times
When you reach the wool, turn the Mālā
Chant Mantra A 28 times till you reach the Meru again

॥ श्री देवी अनुष्ठानम् ॥

सामग्री

१. देवी का चित्र अथवा विग्रह

२. चौरंग (देवी का चित्र अथवा विग्रह स्थापित करने हेतु)

३. लाल रंग का रेशमी वस्त्र चौरंग पर बिछाने के लिये

४. लाल रंग के पुष्प

५. दीपक

६. दीपक को बुझने से बचाने हेतु काँच का आवरण

७. गाय के दूध से बना घी

८. दो लंबी बातियाँ

९. स्वयं का आसन

१०. स्वयं की जपमाला

११. आचमन पात्र, चम्मच, प्लेट

निर्देश

१. अनुष्ठान के तीन मंत्र अगले पृष्ठ पर दिए गए हैं।

A (28) – B (28) – C (108) – B (28) – A (28)

मंत्रों की सही गणना रखने हेतु , जपमाला के मेरु / शिखा मणि से आरंभ कर, दोनों ओर २८ वीं और २९ वीं मणि के मध्य में ऊन का अथवा रेशम का छोटा धागा बाँधें।

२. आसन पर पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख होकर बैठें।

३. देवी विग्रह अथवा देवी चित्र के सामने अपनी बाँईं ओर प्रज्वलित घी का दिया रखें।

४. अगले पृष्ठ पर दिए गए संकल्प का उच्चारण करें।

५. जपमाला की प्रत्येक मणि पर निर्देशानुसार हर मंत्र का एक बार उच्चारण होगा।

प्रथम मणि से आरंभ कर पहले मंत्र (A) का उच्चारण २८ बार करें ।

ऊन के धागे से माला को घुमाकर दूसरे मंत्र (B) का उच्चारण २८ बार करें।

मेरु / शिखा मणि पर माला को घुमाकर तीसरे मंत्र (C) का उच्चारण १०८ बार करें।

पुनः मेरु / शिखा मणि पर माला को घुमाकर दूसरे मंत्र (B) का उच्चारण २८ बार तथा ऊन के धागे से माला को घुमाकर पहले मंत्र (A) का उच्चारण २८ बार करते हुए मेरु तक पहुँचे।

॥ श्री देवी अनुष्ठानम् ॥

आचमनम्

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

प्राणायामः - अनुलोम-विलोम के तीन आवर्तन करें।

आत्मप्रोक्षणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाऽवस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

आसनशुद्धिः

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

दिग्बन्धः

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

सङ्कल्पः

अस्मद् मठस्य मठीयसमाजस्य च अभिवृद्ध्यर्थं ,

गुरुसेवायां निरतानां साधकानां सेवकवर्गाणां च कार्येषु ,

शत्रुत्व-स्वरूपी-प्रत्यूहविनाशार्थं ,

भगवती-जगदम्बाप्रसादेन उत्तरोत्तर-अभिवृद्धिद्वारा ,

सद्बुद्धि-स्थिरता-पूर्वक-शान्ति-समाधानलाभार्थं ,

सपरिवार-श्रीजगदम्बादेवताप्रीत्यर्थं ,

गुर्वनुज्ञया प्रेरिताः वयं

देवीमन्त्रजप-अनुष्ठानाख्यं कर्म करिष्यामः ॥

मन्त्राः

A	-	B	-	C	-	B	-	A
28		28		108		28		28

A. सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ।

B. शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥

C. सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि-विनाशनम् ॥

समर्पणम्

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रि त्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।